

## सत्ताईसवाँ पाठ व्यर्थ की शंका (चित्रकथा 1)

1. किसी गाँव में एक दंपति रहते थे। उनकी कोई संतान नहीं थी।



2. उन दोनों ने एक छोटे-से नेवले को पाल लिया। पित-पत्नी नेवले को बहुत प्यार करने लगे।

तू तो मेरा राजा बेटा है।







5. उसे नेवले पर गुस्सा आता रहता था। स्त्री को संदेह था कि नेवला उसकी बेटी से जलता है और इसलिए वह चुपचाप बैठा रहता है।

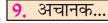


6. पित के मन में नेवले के प्रित कोई संदेह नहीं था। वह पत्नी को समझाता, नेवला मेरी बेटी से क्यों जलेगा? ये दोनों हमारी संतानें हैं।

तुम तो हमारे बेटे हो। अपनी छोटी बहन से प्यार जताओ, उसके साथ खेलो।







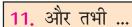
मैं तो भूल ही गया था कि आज शाम को पड़ोसी के घर में मेहमान आनेवाले हैं। चलूँ अभी बता दूँ, नहीं तो उसे उलझन होगी।



पित को नेवले पर संदेह नहीं था उसे एक काम याद आया। घर से निकलते हुए उसने नेवले से कहा— तुम अपनी बहन का ध्यान रखना, थोड़ी देर में वापस आ जाऊँगा।



उसकी बात सुनकर नेवला सतर्क हो गया। वह बच्ची के पालने के पास जा बैठा।





नेवले ने देखा...

बच्ची पालने में सो रही थी। और दरवाज़े से एक साँप पालने की ओर बढ़ता चला आ रहा है।



नेवला साँप पर झपटा। उसने साँप को पकड़ लिया, दांतों से टुकड़े-टुकड़े कर साँप को मार डाला।



















## 1. नीचे दिए गए कथन किसके हैं?

## कथन

- 1. तू तो मेरा राजा बेटा है।
- 2. सुनो ..., मैं पानी लेने जा रही हूँ।
- 3. अपनी बहन का ध्यान रखना।
- 4. माँ मुझ पर बहुत प्रसन्न होगी।
- 5. हाय! हाय! यह मैंने क्या कर डाला।
- 6. कोई भी काम सोच-समझकरही करना चाहिए।

## 2. प्रश्नों के उत्तर दो

- 1. स्त्री के मन में नेवले के बारे में क्या संदेह था?
- 2. पति ने पत्नी को नेवले के बारे में क्या समझाया?
- 3. जब साँप बच्ची के पालने की ओर आता दिखा तो नेवले ने क्या किया?
- 4. स्त्री फूट-फूटकर क्यों रोने लगी?
- 5. दंपति, नेवले को जीवन भर क्यों नहीं भूल पाए?

